भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन -
उदय, विकास एवं राजनीतिक प्रवृत्तियाँ - I

कांग्रेस की स्थापना :-

19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में अंधेरा छटने लगा था। देश-प्रेम और राष्ट्रीय स्वाभिमान की तरंगे हिलोरे लेने लगी थी। समाज के विभिन्न वर्गों में अंग्रेजी शासन के प्रति असन्तोष की चिन्गारियाँ उठने लगी थी। जिसके कारण भारतीयों ने राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक संगठन की आवश्यकता अनुभव की, जिसके परिणामस्वरूप थोड़े ही समय में ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन (1881) बम्बई में, बॉम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसिएशन (31 जनवरी, 1885) पूना सार्वजनिक सभा (1867) आदि प्रान्तीय संस्थाएं अस्तित्व में आयी। लेकिन अखिल भारतीय स्तर पर ऐसा कोई संगठन या मंच नहीं था जहाँ सभी लोग एकत्रित होकर अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सके। ऐसी कोई सुदृढ़ संस्था नहीं थी जो सबको एक सूत्र में पिरोकर समाज का मार्गदर्शन कर सकें। देशव्यापी संगठन की आवश्यकता अधिकाधिक अनुभव की जाने लगी थी। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी द्वारा स्थापित एसोसिएशन ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य भी किया परन्तु उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त नहीं हुई।

ऐसे समय में एक अवकाश प्राप्त अंग्रेज उच्च अधिकारी एलेन आक्टेवियन ह्यूम (A. O. Hume) के मस्तिष्क में राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का विचार उत्पन्न हुआ और दिसम्बर 1885 में ए० ओ० ह्यूम द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की गई, इसलिए ह्यूम को इस संस्था का जनक कहा जाता है।

"No religion has mandated killing others as a requirement for its sustenance or promotion." –Dr.A.P.J.Abdul Kalam

Date ___/___/______ Page No.: ______

वास्तव में ह्यूम 1885 से पूर्व ही इस संस्था के निर्माण में लग गये थे। इसके तहत उन्होंने 1 मार्च 1883 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के छात्रो को सम्बोधित करते हुए एक खुला पत्र लिखा था। इस पत्र में उन्होंने 50 नवयुवकों की माँग की, जो भले, सच्चे और निःस्वार्थी, आत्मसंयमी एवं नैतिक साहस से युक्त हो साथ-ही-साथ मातृभूमि की सेवा के लिए ललकारा भी।

ह्यूम का यही विचार राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना का आधार बना। ह्यूम ने जब यह योजना गर्वनर जनरल डफरिन के सम्मुख रखी तो लार्ड डफरिन ने प्रस्तावित संगठन के कार्य-क्षेत्र को विस्तृत करने का सुझाव देते हुए कहा कि इस संगठन द्वारा राजनीति क्षेत्र में कार्य किया जाना चाहिए। ह्यूम भारत में समाज-सुधार करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने कहा की यह बहुत अच्छा होगा की यदि भारत के मुख्य राजनीतिज्ञ एक स्थान पर एकत्रित हो समाजिक विषयों पर चर्चा करें और एक दूसरे के मित्र बनें। वे यही नहीं चाहते थे कि ये लोग एकत्रित होकर राजनीतिक विषयो पर विचार विनिमय करें। कांग्रेस की स्थापना से पूर्व ह्यूम इंग्लैण्ड इंग्लैण्ड चले गये और उन्होंने लार्ड रिपन, डलहौजी जान ब्राइट आदि राजनीतिज्ञों से भावी संगठन के बारे में विचार-विमर्श किया।

ह्यूम ने इंग्लैण्ड से वापस आने पर यह निश्चित किया कि कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन 25 से 28 दिसम्बर 1885 को पूना में आयोजित किया जाए। परन्तु पूना में हैजा फैल जाने के कारण यह सम्मेलन (मुम्बई) में आयोजित किया जाए। ~~परन्तु~~ दिसम्बर 1885 को दिन के 12 बजे गोकुलदास तेजपाल संस्कृत पाठशाला के प्रांगण में आयोजित किया गया।

इसमें देश के विभिन्न भागो से आये हुए 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
... संस्थान

इस सम्मेलन की अध्यक्षता बंगाल के व्योमेशचन्द्र बनर्जी ने किया। इसमें ह्यूम आदि अन्य सरकारी अधिकारी भाग लिए। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी इस अधिवेशन में भाग नहीं ले सके। क्योंकि उनके द्वारा स्थापित इंडियन एसोसिएशन का दूसरा अधिवेशन कलकत्ता में चल रहा था। परन्तु इसके बाद उन्होंने अपनी संस्था भंग कर दी। और वे कांग्रेस में शामिल हो गये।

28 दिसम्बर 1885 को बम्बई में आयोजित सम्मेलन में पर्याप्त विचार-विमर्श के पश्चात इस की संस्था का नाम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस रखा गया।

इसके सन्दर्भ में कुपलैण्ड ने लिखा है कि भारतीय राष्ट्रीयता ब्रिटिश राज की शिशु थी और ब्रिटिश अधिकारियों ने उसके पालने हेतु आशीर्वाद दिया।"

प्राचार्य
...रा मैमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान